International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 4.935
Vol.8 No.2 Nov – Dec 2020

शेखर जोशी की कहानियों में आधुनिक जीवन

श्री सुनिल दिनकर कांबळे
शोधार्थी
अनुसंधान केंद्र, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (कर्नाटक शाखा)
डी. सी. कंपाउंड, धारवाड़

प्रस्तावना:

आज वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो विश्व का कोई भी क्षेत्र आधुनिकता एवं आधुनिकता-बोध की लपेट से परे नहीं रहा है। छोटा कस्बा, गाँव, नगर, महानगर, कुछ भी हो किंतु वे सभी आधुनिकता एवं आधुनिकता-बोध रूपी बवंडर में फँस ही गए हैं। आधुनिकता एवं आधुनिकता-बोध का अत्यधिक प्रभाव पश्चिम के देशों पर पड़ा है। यदि आधुनिकता-बोध का सीधा-साधा अर्थ ग्रहण किया जाए तो आधुनिकता को अपने जीवन में उतारना एवं अपने इर्द-गिर्द उसकी स्वीकृति प्राप्त करना। आधुनिक हिंदी कहानी लेखकों की तुलना में शेखर जोशी ने उत्कृष्ट आधुनिकता-बोध प्रदान किया है। फलतः उनका स्थान शीर्षस्थ आधुनिक लेखकों में शामिल हो गया।

शेखर जोशी जी ने अपनी कहानियों की विशेषताओं द्वारा प्रारंभ से ही पाठकों का ध्यान आकर्षित किया। इनकी कहानियाँ मनुष्य जीवन की ज्वलंत समस्याओं को अपने आप में समेटे हुए हैं। अपनी कहानियों में एकरूपता स्थापित न करते हुए समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों का बारीक परीक्षण करने के पश्चात उन क्षेत्रों को अपनी कहानियों के विषय बनाए हैं। शेखर जोशी जी ने अपनी कहानियों में व्यक्ति की संवेदनात्मक स्थिति, आंतरिक अनुभूतियाँ एवं अस्तित्व की विषमताओं को उठाया। शेखर जोशी जी की कहानियों के विविध रूप कथानक व्यक्ति और समाज के अंतबाह्य संपर्कों के कथानक है। शेखर जोशी जी की कहानियों में नवी विचार पद्धति, भाषा, मुहावरे आदि को स्थान प्राप्त होता है। इनकी कहानियाँ इतिहास से मुक्त एवं आधुनिक है। इन्होंने अपनी कहानी संसार में विशेषता आधुनिक समस्याओं को उभारा है।

शेखर जोशी जी के पात्र भारतीय जीवन परंपरा के प्रति आस्थावान है। उन्होंने आधुनिकता के पीछे अपनी कहानियों के अंतर्गत प्राचीन परंपराओं को तोड़-फोड़कर उनको अस्वीकृत करने का प्रयत्न नही किया बल्कि कहानियों के पात्रों द्वारा सडी-गली मान्यताओं का विरोध प्रकट किया गया है। उनकी कहानियों का रचनातल विस्तृत है, जिसमें उन्होंने मोहभंग, देश-विभाजन से उत्पन्न त्रासदी, राजनैतिक एवं सामाजिक भ्रष्टाचार, आर्थिक विडंबना, यांत्रिकता, यथार्थता-बोध इत्यादि स्थितियों को भाषा प्रदान की है। जोशी जी की कहानियाँ झूठ के बीच से नहीं, सच्चाई और प्रमाणिकता के बीच से गुजरने की अनुभूति की गवाही देती है क्योंकि जोशी जी ने जीवन में जो कुछ भोगा-झेला, उन सबको कहानी का रूप दिया है। आधुनिक व्यक्ति सामाजिक परंपराओं, मान्यताओं इत्यादि को अस्वीकार कर अपने ढंग से अपना जीवन व्यतीत करने की उधेड़बुन में सही विकल्प की प्राप्ति के लिए निरंतर टूट-टूटकर जी रहा है।

आधुनिक समाज जीवन में मूल्य-संक्रमण:

स्वातंत्र्योत्तर भारत में 'आधुनिकता' के संचरण के साथ-साथ। मूल्य परिवर्तन भी परिलक्षित होता है। 'आधुनिकता' के परिणामस्वरूप मूल्यों में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। यह कहना मुश्किल है कि आधुनिकता और मूल्य-परिवर्तन में कौन किसका कारण बनता है। आधुनिक दृष्टि पुराने जीवन-मूल्यों का पुनः संस्कार कर उन्हें युगानुरूप बना देती है। वैज्ञानिक उपलब्धियों, तकनीकी ज्ञान और औद्योगिक उन्नति से हमारे जीवन रीति में इतने तेज परिवर्तन हुई है जो पहले कभी नहीं हुए। परिणामस्वरूप वर्तमान समय में मूल्य-परिवर्तन की गति भी तेज हो रही है। आज ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी आदि क्षेत्रों में जितनी अधिक उन्नति हो रही है, उसी गति से मूल्यों का परिवर्तन लक्षित किया जा सकता है। बात यह है कि किसी भी समाज का व्यापक आधुनिकीकरण मूल्यों के परिवर्तन को अनिवार्य बना देता है। कभी-कभी सामाजिक परिवर्तन से जन्मे नए मूल्यों को पुराने मूल्यों से गहरा टकराव भी होता है।

शेखर जोशी के 'उस्ताद' इस कहानियों में आधुनिक समाज में मूल्य संक्रमण दिखाई देता है। कहानी में पढ़ा-लिखा युवक रोजगार के अभाव एक सिफारिश से कारखाने में काम सीखने आया है। युवक की पारिवारिक स्थिति सदृढ़ नहीं थी। कई महीने काम करने के बाद वॉलटाइमिंग बांधना नहीं सीखा था। वह अन्य मिस्त्रियों से वॉलटाइमिंग बाँधना सीखना चाहता है मगर हर बार कोई बहाना बनाकर नकारा जाता

है। कारखाने में काम करने वाले उस्ताद ने अपना महत्व बताते हुए कहा कि "**तीस साल हो गए हैं, यही मोटरों का काम करते-करते। डॉक्टर के पास सौ मरीज आते हैं, तो बस ठीक भी नहीं होते लेकिन कसम है इन औजारों की जो आज तक एक गाड़ी भी मेरे हाथ से खराब निकली हो। पूछ लो उससे।**" कहानी में उस पढ़े-लिखे नवयुवक को कई बार धौंस सुननी पड़ती है। वॉलटाइमिंग सिखाने के बारे में सभी मिस्त्री उसको नकारते है। एक जमाने में गुरु का कितना महत्व था। गुरु अपना सर्वस्व, अपना सब ज्ञान शिष्य को देते थे। मगर यहाँ पर युवक को संघर्ष करना पड़ा है।

आधुनिक जीवन में अकेलापन:

आधुनिक युग में अकेलापन यह एक बड़ी समस्या बन गई है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में कस्बों और नगरों से लेकर महानगरों तक 'अकेलापन' की समस्या अधिक तेजी से उभरती दिखाई देती है। आज भारत में संयुक्त परिवारों के टूटन तथा माता-पिता तथा एक या दो संतानोंवाले छोटे परिवारों की प्रथा निकलने से व्यक्ति में अकेलेपन का एहसास बढ़ता है। इस प्रकार नाते रिश्ते में हुए परिवर्तनों के कारण या कभी संतान के अभाव के कारण या सनातनी विचारों के कारण या परिश्रमी व्यक्तियों के परिश्रम का महत्व नकारने के कारण या कामकाजी व्यक्ति के व्यस्तता के कारण व्यक्ति को 'अकेलापन' अनुभव होता है। आज समाज व्यवस्था में व्यक्ति धनार्जन करनेवाला यंत्र सा बन गया है। व्यक्ति के धनार्जन की क्षमता कम होने पर घर में उसकी उपेक्षा शुरू होती है और इस उपेक्षा से बेहद अकेलेपन का एहसास होता है। पारिवारिक मूल्यों का विघटन उभरती हुई भौतिकतावादी जीवन दृष्टि, घोर व्यक्तिवाद, महँगाई का बढ़ना आदि के कारण वे व्यक्ति नकारे जाते है, जिनका अर्थ-मूल्य खत्म हो जाता है अथवा वो शारीरिक रूप से दुर्बल हो जाते हैं। ऐसे कई कारणों से व्यक्ति में 'अकेलापन' आ जाता है।

शेखर जोशी जी के कई कहानियों में 'अकेलापन' का जिक्र किया है। उनकी 'रिक्ति' इस कहानी में मीना नाम की एक अवकाश प्राप्त 'महिला' अकेलेपन की त्रासदी का शिकार हुई है। कॉलेज की नौकरी से अवकाश प्राप्त हो जाने पर समय गुजारना मीना के लिए कठिन हो गया है। कहानी में खुद अकेलेपन की त्रासदी झेलनेवाली मीना अकेले परिवार के हर सदस्य को प्रतिक्षण व्यस्त देखती आई थी। पिता सुबह ही साइकिल पर अपना इंश्योरेंस कंपनी का बैग रखकर घर से निकल जाते। साइकिल बाहर निकालते-निकालते उनका स्वर जीने से सुनाई देता- "**बिट्टी! जरा सब्जी का थैला पकड़ा देना,**

मंडी से होकर आ जाएंगे।"1 फिर क्षण बर बाद ही उनकी दूसरी पुकार सुनाई देती- "**जल्दी करो बेटे! हमें और भी काम है।**" ऐसा बचपन देखने वाली मीना को नौकरी से अवकाश प्राप्त होने के बाद जिंदगी कठीन लग रही थी।

अपने जीवन में व्यस्तता रखने के लिए मीना अलग-अलग अखबार पढ़ती थी, टीवी पर समाचार देखती थी। अकेलेपन की त्रासदी में मीना को ये भी नही पता चलता कि आज सोमवार है या मंगलवार। समय बिताने के लिए वह बालकनी में खड़ी होकर देखती है कि बस-स्टैंड पर स्कूल कॉलेज जाने वाले लड़के-लड़कियों की कतार लंबी होती जा रही थी। बंगले की चारदीवारी के पास हॉज में घुटने-घुटने पानी में खड़ी धोबिन खिलखिलाकर हँसती और बतियाती जा रही थी।

शेखर जोशी जी के 'संवादहीन' इस कहानी में अकेलापन दिखाई देता है। कहानी की मुख्य नायिका 'ताई' नाम की महिला है। गाँव के बीच स्थित बड़े घर के उस सुने खंडहर में ओ एक तोते के साथ रहती है। ताई ने अपने जीवन में अच्छे दिन भी देखे थे। पूत परिवार, बहू-बेटियाँ नौकर-चाकर, गाय-ढोर क्या नही था बड़े घर में! देखते ही देखते क्या से क्या हो गया। बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शाहों के होकर रह गया। बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों होकर रह गए। बेटियाँ अपने-अपने हाथ पीले कराकर अपनी गृगस्थि में राम गई, पराया धन तो पराया ही होता है, किसके भरोसे कारबार संभालता। धीरे-धीरे सब पराए हाथों में चला गए गया। जब खेती-बाड़ी नही कारबार नही तो नौकर चाकर किस दम पर टिकते! अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूंक लेती, व्रत-उपवास के बहाने चौका-चूल्हा टाल जाती पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही, पर सूने घर की भांय-भाय जैसे उन्हें काटने को दौड़ दी थी।

अपना जीवन अकेलेपन में गुजारने वाली ताई कभी-कभी गहरी सांस लेकर कहती "**भगवान! कैसे नैया पार लगेगी? और बंद पिछड़े में अपने पंखों को फड़फड़ाता, उछल कूद मचाता मिट्ठू उत्तर देता, "राम-राम कहो, सीताराम कहो।**" शेखर जोशी जी की कहानी में इस प्रकार 'अकेलापन' यह आधुनिकता बोध दिखाई देता है।

शेखर जोशी जी "कोसी का घटवार" इस कहानी में भी अकेलापन दिखाई देता है। पुराने जमाने में घर-परिवार बड़ा होता था।

आधुनिक जीवन में पारिवारिक संघर्ष:

शेखर जोशी जी की कई कहानियों में आधुनिक जीवन का परिवारिक संघर्ष दिखता है। परंपरागत आस्था एवं नैतिक मूल्यों के विघटन के फलस्वरूप दांपत्य एवं पारिवारिक जीवन का भी रास हुआ है। परिवार समाज की एक इकाई है। परिवार से ही समाज का निर्माण होता। एक परिवार में बहुत सदस्य होते है जो एक दूसरे के सुख-दुःख में समान सहभागिता रखते है। लेकिन जब परिवार में अपने पराये की भावना पनपने लगती है और लोग एक दूसरे में कमियाँ ढूंढने लगते है तो परिवारिक संघर्ष जन्म लेता है। कभी-कभी संयुक्त परिवार में झगड़े का मुख्य कारण संपत्ति ही होता है। संपत्ति को लेकर परिवारों में आये दिन क्लेश होते दिखते है। आज के इस युग में पति-पत्नी के बीच भी अब आत्मीय संबंध नही रहा। पति-पत्नी के विचारों में विविधता होने से परिवारिक संघर्ष होता है।

परिवारिक संघर्ष केवल पति-पत्नी के बीच तनाव के कारण ही नहीं होता बल्कि माता-पिता तथा बच्चों के बीच तनावपूर्ण स्थिति के कारण भी होता है। आधुनिक हिंदी कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से पारिवारिक संघर्ष और उसके दुष्परिणामों पर भी नजर डाली है और अपनी कहानियों में यथास्थिति से सुपरिचित भी कराया है।

आधुनिक जीवन में बेरोजगारी:

'बेरोजगारी' यह आधुनिक जीवन का एक लक्षण है, जो शेखर जोशी जी के कहानीयों में देखने को मिलता है। वर्तमान समय में सबसे भयंकर समस्या बेरोजगारी है। बेरोजगारी का आधा संबंध गरीबी से है। बेरोजगारी का अर्थ समान्यतः लोग बेकार से लगाते है, अर्थात जो व्यक्ति बेकार है वही बेरोजगार है किंतु यह धारणा गलत है। बेरोजगार हम उन व्यक्तियों को कहते है जिसमें कार्य करने की योग्यता, इच्छा एवं क्षमता होने के बावजूद कार्य नही मिलता है तब उसे बेरोजगार कहेंगे।

आधुनिक जीवन में महिला आत्मनिर्भरता:

किसी भी काल में स्त्री विहीन समाज की कल्पना करना असंभव है। समाज के उन्नयन एवं विकास के लिए नारी का होना आवश्यक है। स्त्री मानव जाति की जन्मदात्री ही नहीं बल्कि उसकी पालक भी है। जीवन की विभिन्न समस्याओं, परिस्थितियों में परिवार के साथ वह विभिन्न रूपों में खड़ी दिखाई देती है मानव समाज को विभिन्न

विडंबना से उभारने के लिए वह स्वयं कई विषम परिस्थितियों से घिरकर भी राह निकालती है। शेखर जोशी जी की कहानियों में, नारी की प्रतिबद्धता अपने परिवार के प्रति है। उनकी कई कहानियों में नारी का आधुनिक जीवन का बदला रूप भी दिखाई देता है। आधुनिक युग में नारी सामाजिक स्तर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब तो हुई है परंतु जीवन के संघर्ष ने उसके परंपरिक और आदर्श रूप पर कई प्रश्न छोड़ जाते है। ऐसी स्थिति में नारी का जीवन दोहरे संघर्ष से गुजरता दिखाई देता है। एक और घर से बाहर आकर बाहरकी जिंदगी की रफ्तार और उथल-पुथल के साथ चलना दूसरा अपनी परंपरित छवि के साथ-साथ उच्च मानवीय मूल्य और संस्कारों को सुरक्षित रखना। शेखर जोशी जी के कहानियों में आत्मनिर्भर नारी, अकेलेपन में अपना जीवन जीनेवाली नारी, स्वाभिमानी और संघर्षवादी नारी, शिक्षित नारी, ऐसी कई सारे नारी के रूप दिखाई देते है। शेखर जोशी जी के 'कथा-व्यथा' इस कहानी में 'जीवन्ती' के माध्यम से जिंदगी के तमाम रूपों का परिचय दिया है। 'जीवन्ती' एक अभागी महिला है। उसके परिवार में वो अकेली है। उसकी बेटी भगवती का विवाह हो गया है।

आधुनिक जीवन में मनोविज्ञान:

21वीं सदी की हिंदी कहानियाँ मनोविज्ञान दृष्टिकोण एवं निष्कर्षों को ग्रहण करती हुई पात्रों की मनोवैज्ञानिक सम्मत व्याख्या प्रस्तुत करती है। इस युग की कहानियों में पात्रों की मनोविज्ञान दृष्टि का स्वरूपांकन किया गया है। मनोविज्ञान मनुष्य जीवन के व्यवहार का विश्लेषण है। प्रेम, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, स्वार्थ आदि मनोभावों के घात-प्रतिघात के आधारवर किसी भी कलाकृति को स्थूल वर्णन द्वारा मनोवैज्ञानिक वोट दिया जा सकता है। साहित्य और मानव विज्ञान का पुट दिया जा सकता है। साहित्य और मनोविज्ञान का अभिन्न संबंध है। शेखर जोशी जी ने अपनी कहानियों में आधुनिक जीवन की निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक समस्याओं को चित्रित किया है।

- पीड़ा या दर्द की समस्या
- अंतर्द्वंद्व की समस्या

आधुनिक महानगरीय जीवन:

शेखर जोशी जी के कई कहानियों में महानगर में जीनेवाले व्यक्ति के आधुनिक जीवन की मानसिकता समस्याएँ- जैसे अकेलापन, अपरिचय, तटस्थता, कुत्रीमता, व्यर्थता-बोध, बेरोजगारी आदि को चित्रित किया गया है। नगरीकरण ने जीवन को खोखला बना दिया है और जीवन को बहुत तेज और संघर्षपूर्ण बना दिया है। शेखर जोशी जी के कई कहानियों के पात्र महानगर में रहने वाले है। महानगरीय जीवन में एक प्रकार की कुत्रिमता, यांत्रिकता तथा संवेदनहीनता उनके जीवन में दिखता है।

आधुनिक जीवन में जिजीविषा:

शेखर जोशी जी के कहानियों के पात्रों में आधुनिक जीवन का 'जिजीविषा' यह महत्वपूर्ण हिस्सा दिखता है। उनकी मेरा पहाड़ इस कहानी संग्रह की 'व्यतीत' कहानी है। कहानी में रमेश एक सामान्य नौकरी करने वाला व्यक्ति है। वह सपरिवार पहाड़ भ्रमण कर सके और अरसे से अपेक्षित पड़े अपने पुरखों की जमीन-जायदाद की मरम्मत करवा सके ऐसी आशा लेख लेकर है, मगर आर्थिकता की अभाव में चुप है। इस बात को लेकर वह बेचैन है। वह विश्वास से शशि को कहता है कि "**शहर में एक मोहल्ले से दूसरे मोहल्ले में भेंट-मुलाकात करने की बात तो हर बार अगले महीने पर टल जाती है। फिर इतने वर्षों से छुटा हुआ घर है- टूट-फूट मरम्मत-सफाई इतना लंबा परिवार लेकर जाना, नाते-रिश्तेदार, लेन-देन सभी कुछ है- कभी इस लायक स्थिति हुई तो जाएँगे ही।**" इस बीच पड़ोसी के निगम साहब के पहाड़ों पर अपने ही गाँव जाने की बात सुनकर रमेश का उत्साहित होना स्वाभाविक था। अपनी जन्मभूमि का आकर्षण उन्हें अपनी ओर खींच रहा था किन्तु अर्थ के अभाव में संभव नहीं हो रहा था। कही न कही अपने पर्वतीय गोद से छीन जाने की पीड़ा उनके मन में थी। ऐसी स्थिति में निगम साहब की इच्छा-अनिच्छा को परे रखते हुए 'बाबू' (रमेश) अनेक हिदायते देने से नहीं चूकते है। जैसे निगम साहब के बहाने वह पहाड़ों से अपने संपर्क को नया कर लेना चाहते है।

निष्कर्ष:

कहानीकार शेखर जोशी जी ने अपनी कहानियों को विविध आधुनिकता से सँजा-सँवारा कर जीवंतता प्रदान करते हुए आधुनिक समाज को विधायक दृष्टि दी है। आधुनिक जीवन की जटिलता और क्षणिक आवेगों से उत्पन्न स्थितियाँ, मूल्यों का

विघटन तथा नवीन मूल्य स्थापित होने की प्रक्रिया, 'स्व' की तलाश भटकता व्यक्ति, उसका अकेलापन, अजनबीपन, रिश्तो का बिलगाव, महानगरीय आधुनिक जीवन, बेरोजगारी, आधुनिक जीवन में बढ़ता धन का प्रभाव, औद्योगिकरण जैसी विडंबना का वर्णन शेखर जोशी जी कहानियों में है ही, परंतु यह वर्णन केवल यथार्थ का चित्रण बनाकर नहीं रह जाता है, बल्कि हमें इस पर पुनः सोचने पर बाध्य करती है कि वास्तव में आधुनिक जीवन की इस आपाधापी ने मनुष्य के विविध अंगों का परिचय कराया है।

इस प्रकार शेखर जोशी जी की कहानियों में आधुनिक जीवन का दर्शन होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि:

1. शेखर जोशी, डांगरी वाले, साहित्य भंडार, सुलेख मुद्रणालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
2. शेखर जोशी, संकलित कहानियाँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, नेहरू भवन, इंस्टीट्यूशनल एरिया, वसंत कुंज, नई दिल्ली
3. शेखर जोशी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, 24 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002
4. शेखर जोशी, मेरा पहाड़, रेमाधव पब्लिकेशन प्रा.लि, राजनगर गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश 201002
5. शेखर जोशी, बच्चे का सपना, संभावना प्रकाशन न्यू शिवपूरी उत्तर प्रदेश 245101